

■ प्रबन्ध की परिभाषाएं (Definitions of Management)

विभिन्न विद्वानों ने प्रबन्ध को इसकी विशेषताओं के आधार पर अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है। कुछ विद्वानों ने प्रबन्ध को 'अन्य लोगों से कार्य करवाने की कला के रूप में परिभाषित किया है तो कुछ ने इसके 'क्रियात्मक रूप' को अधिक महत्व दिया है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रबन्ध का संबंध 'निर्णय लेने' से है तो कुछ 'उत्पादकता व कुशलता' को प्रबन्ध का आधार मानते हैं। प्रबन्ध की कुछ प्रमुख परिभाषाएं अग्रलिखित हैं:

(1) हेरोल्ड कून्ट्ज के अनुसार, "प्रबन्ध औपचारिक रूप से संगठित समूहों में, अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करने तथा करवाने की कला है।" (Management is the art of getting things done through and with formally organised groups.- **Harold Koontz**)

(2) जार्ज आर० टेरी के शब्दों में, "प्रबन्ध एक विशेष प्रक्रिया है जिसमें नियोजन, संगठन, उत्प्रेरणा एवं नियन्त्रण सम्मिलित हैं। इनमें से प्रत्येक में विज्ञान एवं कला दोनों का प्रयोग करते हुए पूर्व निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए इनका अनुसरण किया जाता है।" (Management is a distinct process co-

■ प्रबन्ध की प्रकृति अथवा विशेषताएं (Nature or Characteristics of Management)

उपरोक्त विवेचन में प्रबन्ध की विशेषताओं तथा प्रकृति की झलक मिलती है। प्रबन्ध की परिभाषाओं का आधार प्रबन्ध की विशेषताएं ही हैं। एक प्रबन्ध विशेषज्ञ ने प्रबन्ध के किसी विशेष लक्षण को अधिक महत्व देते हुए उसी के आधार पर अपना मत प्रस्तुत किया है तो दूसरे विशेषज्ञ ने किसी दूसरे लक्षण को अधिक महत्व दिया है। जबकि वास्तविकता यह है कि प्रबन्ध में वे सभी लक्षण विद्यमान हैं जो विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं। परिभाषाओं का अध्ययन करने से प्रबन्ध की निम्नलिखित विशेषताएं प्रकट होती हैं:

(1) यह एक सामूहिक क्रिया है (It is a Group Activity): प्रबन्ध की इस विशेषता के अनुसार, प्रबन्धकीय क्रिया को सम्पन्न करने वाला कोई एक व्यक्ति (अकेला प्रबन्धक) नहीं होता है बल्कि यह तो अनेक व्यक्तियों (प्रबन्धकों) का समूह होता है। अर्थात् जब भी हम प्रबन्ध शब्द का उच्चारण करते हैं इसका अभिप्राय एक संस्था में कार्यरत उन सभी व्यक्तियों से है जो प्रबन्धकीय पदों पर नियुक्त हैं। संस्था में लिए जाने वाले प्रत्येक निर्णय से सभी प्रबन्धक प्रभावित होते हैं। सभी के मिल-जुल कर काम करने पर ही किसी काम को सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक कम्पनी अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विपणन प्रबन्धक, उत्पादन प्रबन्धक, क्रय प्रबन्धक, वित्त प्रबन्धक, सेविवर्गीय प्रबन्धक आदि सभी की भागीदारी आवश्यक है। अतः प्रबन्ध को सामूहिक प्रयत्न कहना बिल्कुल ठीक है।

(2) यह उद्देश्य प्रधान प्रक्रिया है (It is a Goal Oriented Process): प्रत्येक संगठन की स्थापना किसी न किसी उद्देश्य प्राप्ति हेतु की जाती है। प्रबन्ध एक ऐसा माध्यम/शक्ति है जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति को सरल बना देता है। प्रबन्धक अपने विशेष ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर भावी घटनाओं का पूर्वानुमान लगाता है व योजनाएं बनाता है। वह अधीनस्थों की कार्य-प्रगति पर लगातार नजर रखता है और उनका मार्ग-दर्शन करता है। समय-समय पर उन्हें अभिप्रेरित करता है और अंततः पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया जाता है।

(3) इसका एक पृथक् अस्तित्व है (It has a Distinct Entity): प्रबन्ध की इस विशेषता के अनुसार, व्यवसाय का पैमाना बढ़ जाने के कारण यह सम्भव नहीं है कि प्रबन्ध क्रिया को स्वामी स्वयं ही सम्पन्न करें। इसको अधिक स्पष्ट करते हुए यह कहा जा सकता है कि किसी व्यावसायिक संस्था में स्वामी (पूंजी लगाने वाले) तथा प्रबन्धक (संचालन अथवा प्रबन्ध करने वाले) अलग-अलग व्यक्ति हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक कम्पनी व्यवसाय में यह सम्भव नहीं है कि कम्पनी के स्वामी अर्थात् अंशधारी या उनके प्रतिनिधि अर्थात् संचालक कम्पनी का प्रबन्ध कुशलतापूर्वक कर सकें। कम्पनी प्रबन्ध के लिए विशेष योग्यता वाले विशेषज्ञ व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जिन्हें प्रबन्धक कहा जाता है। इस प्रकार प्रबन्ध का एक पृथक् अस्तित्व होता है।

TOOL KIT - 2

प्रबन्ध एक सामूहिक प्रयत्न :

एक महत्वपूर्ण जानकारी

(Management is a Group

Effort : An Important Note)

यहां पर यह स्पष्टतः समझ लेना जरूरी है कि प्रबन्ध की समूह के रूप में पहचान केवल बड़ी संस्थाओं के संदर्भ में ही है, क्योंकि इनमें विभिन्न प्रबन्धकीय स्तरों पर अनेक प्रबन्धक नियुक्त किए जाते हैं। दूसरी ओर, छोटी संस्थाओं में केवल एक प्रबन्धक से भी काम चल सकता है जो सभी गतिविधियों को स्वयं ही करता है। ऐसी संस्थाओं के संबंध में प्रबन्ध को समूह कहना उचित नहीं होगा।

(4) यह एक अदृश्य शक्ति है (It is an Intangible Force): प्रबन्ध एक ऐसी शक्ति है जिसको प्रत्यक्ष या मूर्त रूप में देखा जा सकता, केवल संस्था की सफलता के मूल्यांकन के आधार पर इसकी अनुभूति की जा सकती है। उदाहरण के लिए, यदि संस्था उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर है तो समझा जायेगा कि प्रबन्ध अच्छा है। इसके विपरीत, यदि कोई संस्था अवनति की ओर जा रही है तो प्रबन्ध की असफलता का संकेत मिलता है। अतः प्रबन्ध को अमूर्त, अदृश्य या अप्रत्यक्ष शक्ति की संज्ञा दी जा सकती है।

(5) यह एक प्रक्रिया है (It is a Process): प्रबन्ध को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करने वाले प्रबन्ध विशेषज्ञों में फ्रैंक गैलब्रैन्ट, टैरी, मेक्फारलैण्ड, कूण्टज तथा ओ'डोनेल प्रमुख हैं। इन विद्वानों के अनुसार प्रबन्ध एक प्रक्रिया है जिसमें नियोजन, संगठन, नियुक्तियाँ, निर्देशन एवं नियन्त्रण सम्मिलित हैं तथा इनका निष्पादन मानवीय एवं भौतिक साधनों के कुशलतापूर्वक उपयोग द्वारा उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रक्रिया का अर्थ होता है किसी काम को करने की एक निश्चित प्रणाली का होना। प्रबन्ध के सम्बन्ध में ऐसा स्पष्ट भी होता है क्योंकि हर प्रबन्धक को चाहे वह किसी भी संस्था का और किसी भी स्तर का प्रबन्धक क्यों न हो, ये कार्य इसी क्रम में करने ही पड़ते हैं। प्रबन्ध प्रक्रिया को निम्न चित्र में स्पष्ट किया गया है:

स चित्र से स्पष्ट होता है कि प्रबन्ध व्यवस्था की निश्चित प्रणाली का पहला कदम नियोजन है जिसके अन्तर्गत यह निश्चित किया जाता है कि संस्था, कब, कैसे तथा कहां करना है और किसके द्वारा किया जाना है? इसके बाद संगठन के ढांचे का निर्माण किया जाता है जिसमें योजनाओं को कार्यरूप देने के लिए विभिन्न व्यक्तियों में सम्बन्ध निश्चित किए जाते हैं। संगठनात्मक ढांचा तैयार करने के बाद विभिन्न पदों पर योग्य व्यक्तियों की नियुक्तियाँ की जाती हैं। इसके बाद योजनाओं के अनुसार कार्य निष्पादन करने हेतु कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए जाते हैं। क्योंकि सभी कर्मचारियों का कार्य एक-दूसरे पर निर्भर रहता है इसलिए कार्य की गति को निर्बाध रूप से चलाने के लिए उनमें समन्वय स्थापित किया जाता है। इसके साथ ही उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाने व उसका पूरा उपयोग करने के लिए उन्हें अभिप्रेरित किया जाता है और अन्त में उनकी क्रियाओं को नियन्त्रित किया जाता है ताकि परिणाम योजनाओं के अनुरूप ही प्राप्त हो सकें।

अतः प्रबन्ध पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों को मानवीय एवं भौतिक साधनों के प्रयोग से प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है।

